R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 23वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

शोध पत्र

(हिंदी साप्ताहिक)

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

दीप उत्सव विशेषांक

वर्ष 23 | अंक 27 | रविवार, इलाहाबाद, 26 नवंबर 2023 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

संपादकीय

दीप उत्सव विशेषांक

दीप उत्सव का पर्व सुहाना लगता है,
हंसी-खुशी धूम-धड़ाका फबता है ।
दीप जलाते घर-आंगन मैदानों में,
पर्व यह पावन बहुत सुहाना लगता है।
दीप उत्सव पर, जन मन उत्साहित रहता है,
उमंग-तरंग का अति संचार ही बहता है ।

तन-मन को प्रफुल्लित करता है यह त्यौहार। यह पुनीत पर्व हमारे सब के आराध्य भगवान राम के लंका विजय के बाद अयोध्या वापसी पर मनाया जाने वाला अपूर्व त्यौहार है। जन-मन-तन को तरंगित करने वाले इस त्यौहार के बारे में -

दीप पर्व पर आंगन-द्वार उजला-उजला ,
हर पावन मन इसमें होता सुधरा-सुधरा।
प्रेम-प्यार पुचकार का यह है पर्व मनभावन ,
हर जन धूम धड़ाके में है लिपटा-लिपटा ।

दीप उत्सव पर आयोजित गूगल मीट द्वारा इस काव्य गोष्ठी में रचनाकारों ने अपनी-अपनी उत्तम-उत्तम रचनाओं का काव्य पाठ करके इस दीप उत्सव कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।एक बानगी देखिये नीता शर्मा कविता की -

कितनी अनुपम छटा,
उस दिन अयोध्या में छाई होगी,
जिस दिन प्रभु राम के पुनः आगमन पर,
हर्षोल्लास से,
अयोध्यावासियों ने दिवाली मनाई होगी।।
अनगिनत रश्मियों ने,
प्रकृति का श्रृंगार किया होगा,
देवी देवताओं ने भी फूल बरसाए होंगे,
ढोल,नगाड़े, मृदंग बजा,
नगरवासियों ने मंगल गीत गाए होंगे।।
राजीव नयन, श्याम वर्ण,
सौम्य छवि देख प्रभु राम की,
अपलक हो नर-नार,
भाव विभोर हुए होंगे,
समय ने भी गति रोक ली होगी,
जब रघुकुल नंदन,
माताओं और भाइयों संग मिले होंगे।।
अति पावन, शुभ वो बेला होगी,
अयोध्यापुरी भी खुद पर इतराई होगी,
बंदनवार लगा,
ध्वजा-पताकाएं फहरा,
घर घर दीप जला,
हर्षोल्लास से,
अयोध्यावासियों ने दिवाली मनाई होगी।।

यह अंक आपको कैसा लगा। प्रतिक्रिया जरूर दें।
अंत में -

बड़े कवि हो तो लिखो बात ऐसी ,
अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाए ।

उमेश श्रीवास्तव

दीवाली का त्योहार

मुबारक हो आपको,दीवाली का त्योहार ।
आज आप पहनो ,खुशियो के हार।
दियो की रोशनी, पताखो की आवाज।
गणपति का पूजन, लछ्मी जी के साथ ।
मिठाईयो की टोकरी,लाई लावे के साथ।
सुंदर परिधानो मे,सजे हम साथ।
खुशियो की रोशनी,आई अपने पास ।
शुभकामनाऐ मेरी,शुभ दीपावली के साथ।
मुबारक हो आपको ,दीवाली का त्योहार ।

दीपावली

भारतीय रीति रिवाजों पर करें गर्व,
चलो मनाएँ दीपावली ज्योति पर्व ।

आसुरी शक्तियों का करके संहार ।
राक्षसी मनोवृत्तियों पर कर प्रहार ।
श्रीराम का हुआ अयोध्या आगमन,
आह्लादित धरा ज्योतिर्मय संसार ।

नतमस्तक नर नारी, देव तथा गंधर्व,
चलो मनाएँ दीपावली पुरुषार्थ पर्व ।

सुषुप्त चेतना का होता है जागरण ।
धूमिल आभामंडल से हटे आवरण ।
अंतर्मन को आलोकित करें ज्योति,
मिटे कुंठा हिंसा रागद्वेष दुराचरण ।

गूढ़ रहस्यमय पुराण ऋग्वेद अथर्व,
चलो मनाएँ दीपावली ज्ञान का पर्व ।

मद्धिम करे अंतर्ज्योति को अज्ञान ।
ज्ञान शिखा करती इसे दैदीप्यमान ।
आत्मारूपी दीपक का दिव्य प्रकाश,
धन वैभव व सुख शांति करे प्रदान ।

अलौकिक शक्ति प्रदाता हे ! अतिसर्व ,
चलो मनाएँ दीपावली आत्मोन्नति पर्व।

बसुंधरा के तमस को करे निष्प्रभाव ।
चहुँओर भव्य प्रकाशीय दिव्य प्रभाव ।
रोग शोक दुर्गुणों का नाश करे ज्योति,
चरित्र में दैवीय गुणों का हो प्रादुर्भाव ।

प्रभु आशीष से मिले धन धान्य व दर्व,
चलो मनाएँ दीपावली अध्यात्मिक पर्व ।

तब ही शुभ दीवाली होगी

आओ हम सब मिलकर,
एक प्रेम का दीप जलाएँ।
अपनी पावन भूमि को हम,
फिर से स्वर्ग बनाएँ।।

सबके दिलों में प्यार हो,
नफ़रत को दिल से मिटा दें,?
सबके दुःखो को बांटे हम सब,
मन में खुशियों के दीप जला दें।
आओ हम सब मिलकर ----

द्वेष भाव और छल कपट का,
नामों निशान मिटा दें।
सबको हृदय से प्रेम करें
प्यार की नदियां बहा दें।।
आओ हम सब मिलकर ----

शुभ दीवाली जब ही होगी,
जब निर्धन का मन खुश होगा।
जब मानव को मानवता की
परख होगी।
आओ हम सब मिलकर,
मानवता का एक दीप जलाएँ!
आओ हम सब मिलकर ----

सरहद पर पहरा देते सैनिक,
पावन धरा की रक्षा करते।
जब हम सब चैन से सोते,
आओ हम सब मिलकर,
वीरों के लिए नित दीप जलाएँ?
आओ हम सब मिलकर ----

कोई भी मानव भूखा न रहे,
और न कोई भी बेघर हो।
सबको सारे सुख,साधन मिले,
तभी तो शुभ दीवाली हो ।।
आओ हम सब मिलकर,
ये! आज सभी संकल्प लें!
कोई भी मानव भूखा न रहे,
ऐसी 'अलख,,का दीप जलाएँ!

नई रोशनी बांट दें

धरती की पावन माटी ने,
मुझको यह आकार दिया है।
उसमें अपना नेह सौंपकर,
मानव ने उपकार किया है।
मैं तो महलों में जलता हूँ,
और कुटिया में भी पलता हूँ।
मुझे किसी को बैर नहीं है,
मेरे लिए कोई गैर नहीं है।
खामियां ना रहे खाईयाँ पाट दें,
ङआज मिलकर नई रोशनी बांट दें

डा. योगिता सिंह 'हंसा'

मेरे राम जी आएंगे मेरे पास

मेरे राम जी आएंगे मेरे पास
गंगा मैया धीरे बहो.....
मेरे राम जी आएंगे मेरे पास
गंगा मैया धीरे बहो
उनका रूप बड़ा सलोना
हाथ में उनके धनुष विराजे
दुष्टों का करो संहार
गंगा मैया धीरे बहो
मेरे राम जी.....
छवि उनकी तो बड़ी निराली
सबको देते मुस्कान प्यारी
संग में उनके प्रियतमा प्यारी
गंगा मैया धीरे बहो
मेरे राम जी.....
लट हैं उनके बड़े घुंघराले
दशरथ जी के राजदुलारे
संग में उनके प्यारे हनुमान
गंगा मैया धीरे बहो
मेरे राम जी.....
सबरी के प्यार को समझा
अहिल्या के दुख को समझा
जिन्होंने रच दिया इतिहास
गंगा मैया धीरे बहो
मेरे राम जी.....
कौशल्या जिनकी महतारी
भरत लखन शत्रुघ्न हैं भाई
बुराई का किया संहार
गंगा मैया धीरे बहो
मेरे राम जी.....
गंगा मैया धीरे बहो

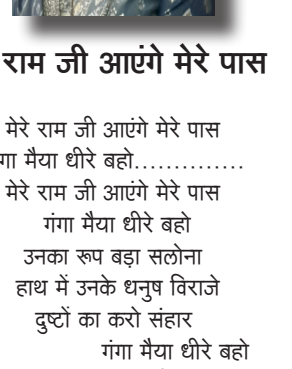

अनुराधा गर्ग 'दीप्ति'

दीपोत्सव

ये हैं भारत के पर्व ।
संग लाते हैं हर्ष ।
ज्ञान दीपक जलाने के लिए।।

देवभूमि है भारत ,अयोध्या मथुरा।
दीप माला से जगमग है ,घर चौबारा।
प्रीत हिलमिल बढ़ाने के लिए ।

घर मोहल्ला हो साफ।
राग द्वेष करो माफ।
बैर सब में मिटाने के लिए।।

पूजें लक्ष्मी गणेश ।
साफ सुथरा परिवेश ।
सुख समृद्धि पाने के लिए।।

पांच दिन का त्योहार ।
हंसी-खुशी का व्यवहार ।
भाई चारा बढ़ाने के लिए है।।

है बुराई अंधकार ।
और अच्छाई प्रकाश ।
दीपोत्सव मनाने के लिए ।।

ज्ञान दीपक जलाने के लिए।
प्रीत जगमग फैलाने के लिए।
बैर सब में मिटाने के लिए।
सुख समृद्धि पाने के लिए।
भाई चारा बढ़ाने के लिए।
दीपोत्सव मनाने के लिए।।

पुष्पा सिंह

दीपावली

आती है दीपावली जलते हैं दिए,
रोशन होता देश है,
पर सारी दुनिया जगमगाती है त
आए इस दिन लौट के मेरे प्रभु राम,
जन-जन का हृदय प्रफुल्लित है
और अयोध्या की तो बात ही क्या
वह तो वैसे ही खुशी से इतराती है त
खड़ी द्वार पर तीनों माएं,
लिए आरती का थाल,
राम लक्ष्मण संग पधारी सीता को,
गले लगा कर अपनी ममता लुटाती हैं
सीख लो अब मेरे देश की युवा बच्चो,
इस त्यौहार के अर्थ को,
हर दिए की रोशनी
बुराई पर अच्छाई का संदेश दे जाती है त
हो मां लक्ष्मी का आगमन हम सबके यहां,
करते विघ्न विनाशक के संग,
पूजन उनका
मां तुम आना जरूर, तेरे आने की चाहत में,
यह पुष्पा अपनी पलके बिछाती है त क्षण
आती है दीपावली जलते हैं दिए रोशन होता देश ,
पर दुनिया जगमगाती है।

जगदीश कौर

एक दीया

एक दीया जलाओ विश्वास का ।
सबके हौसले और आस का ।
हो या जात धर्म से बहुत दूर ।
हो इसमें इंसानियत का नूर ।
रूहानियत और मूल्यों से भरपूर।
उसपे धड़के जमीर जरूर ।
ऐसा दीप इस बार जलाना होगा।
अज्ञानता का अंधेरा भगाना होगा

प्रकृति न प्रदूषण की मार सहे ।
प्रदूषण रहित दीपावली चले ।
खुशियों से न वंचित रहे कोई ।
ईश्वर इस बार सुनों अरजोई।
सबके थरों में उजाला हो ।
दुःखों का न जाला हो ।
कोई न बिलखता हुआ रहे।
सबका घर खुशियों से सजे ।

न जात धर्म का शोर हो ।
न दुख की घटा घनघोर हो।
इस बार घर में दीप जलाएं।
कुम्हारों के घर भी खुशियां आएं।
रोशन देने जो तुम्हारे घर को।
सोएं न होगे कितने रातों को ।
उनके होठों पर मुसकान दे।
ऐसा इस बार पैगाम दे ।

एक चक्कर अनाथालय का लगाएं ।
वहां भी जाकर मिठाइयां बाँट आएं।
इस बार सच्चे दिल से इबादत करें।
इस बार की दीपावली उनके नाम करें।
ईश्वर को न जरूरत मिठाई और दीये की ।
उसकी खुशी हर इंसान की है खुशी ।
गरीब के घर में होगी अगर दीपावली ।
ईश्वर के होठों में आएंगी फिर लाली ।
आओं हम सब मिलके एक प्रतिज्ञा ले ।
एक एक घर की जिम्मेदारी हाथों में ले।
इस बार मनाएं हम कुछ इस तरह दीपावली।
कोई न रहे दुःखी, सबके होठों में रहे लाली।।

डॉ कुमकुम शुक्ला

राम भजन

हे राम दयालु दया करके
रख सेवक अपने पास मुझे
मेरे हृदय में राम रमण करके
मेरे रोम - रोम में बस जाओ।
हे राम! दयालु दया करके
रख सेवक अपने पास मुझे ।
तुम आदि अनामय अविनाशी ,
घट - घट व्यापी जग तारण हो ।
तुम भक्तों के दुःख भंजक हो ,
सुख कर्ता जग पालन कर्ता हो।
हे राम ! दयालु दया करके ,
रख सेवक अपने पास मुझे ।
तुम शरणागत के रक्षक हो ,
मैं शरण में तेरी आई हूँ।
अब डोर मेरी तेरे हाथों ,
मेरी भव बाधाएं मिटा देना ।
हे राम ! दयालु दया करके
रख सेवक अपने पास मुझे ।

विभा श्रीवास्तव

राम

कैकयी के दिए ,
चौदह वर्ष के ,
वनवास ने राम को,
मर्यादा पुरुषोत्तम ,
'श्रीराम' बना दिया।
तो चार सौ बाव्रवे वर्ष ,
बाबर के दिए वनवास ने ,
श्री राम को ,जग मे ,
जन - जन के जीवन का ,
आधार बना दिया।
प्रेम बना दिया,
परित्याग बना दिया,
संकल्प और समर्पण बना दिया।
भारत के संस्कारो का ,
उदयमान बना दिया।
मिटते हुए अस्तित्व को,
बचाने की एक राह बना दिया।
कटघरे मे जब ,
खड़ा किया गया ,
श्री राम को ,
तब भगवान ने ,
स्वंय ही न्यायधीशो को ,
भगवान बना दिया।

सिम्पल काव्यधारा

ग़ज़ल

चलो मिल के हम प्रेम दीपक जलाएं
सभी द्वेष नफ़रत को दिल से भगाएं

चलो नफ़रतों की ये दीवार तोड़े
कि सद्भावना सबके दिल में जगाएं

सिया राम आए अयोध्या की नगरी
अवध में सभी आज नाचें औ गाएं

खुशी का है मौका ये शुभ की घड़ी है
चलो घर को दुल्हन-सा हम सब सजाएं

गजानन औ लक्ष्मी की पूजा करें सब
कि सौहार्द से मिल के खुशियाँ मनाएं

दिवाली में मिल-जुल के त्योहार करना
सभी को दिवाली की शुभकामनाएं

कहे 'काव्यधारा'करो सब ये वादा
नहीं दिल किसी का कभी हम दुखाएं

शैल बाला सिंह

शुभ दीपावली

है रोशनी का पर्व ये सबको हो शुभ दीपावली।
कर दो कृपा सब पर प्रभु सबको हो शुभ दीपावली।

धन धान्य की हो वृष्टि सब पर हर हृदय हर्षित रहे ,
निशि दिवस विहंसे जन सभी सबको हो शुभ दीपावली।

सौहार्द की सरिता बहे आकंठ डूबें प्रेम में,
हो कलुषता का नाश और सबको हो शुभ दीपावली।

दीपक जले सबके निलय गृह तिमिर सबका दूर हो,
उल्लास हो मन में नया सबको हो शुभ दीपावली।

संकल्प लें हम इक नया इस शुचित पावन पर्व पर,
लाएं स्मित हर अधर पर सबको हो शुभ दीपावली।

जो दीन हीन विहीन सुख से कोई जन दीखे हमें,
तत्क्षण करें उसका भला सबको हो शुभ दीपावली।

संध्या शुक्ला

दीप ने दीप से है कहा

(1)
दीप ने दीप से है कहा
है नहीं कुछ नया यह सिलसिला
वर्ष में एक बार ही तो सब
जगमगा पाते हैं वसुंधरा

(2)
बस उसी दिन तुम अपनी दिवाली मनाना
काम या ज्यादा है द्वेष सभी में
जिस दिन उन्हें तुम जीत कर आना
बस उसी दिन तुम अपनी दिवाली
है मन का तुम्हारे साम्राज्य अयोध्या
जिस पर सजा है सिंहासन अंहम का
जिस दिन मन विजय करके आना
बस उसी दिन तुम अपने दिवाली मनाना
प्रलोभन सारे तिरोहित जब करना
कर्तव्यों को जब वरीयता में रखना
श्री राम सा जीवन चरित्र जब सजाना
बस उसी दिन तुम अपनी दिवाली मनाना
असहज परिस्थिति में सहज होकर रहना
इंद्रीय सुखों को जब निग्रह करना
आदर्श बनाकर जिस दिन निखरना
बस उसी दिन तुम अपनी दिवाली मनाना
जब कोई रत्न हाथों से फिसले तुम्हारे
फिर भी ना टूटे मनोबल तुम्हारे
खुद पर यकीं हो जिस दिन तुम्हारा
बस उसी दिन तुम अपनी दिवाली मनाना।

उमा मिश्रा प्रीति

कार्तिक महात्मा

कार्तिक माह बड़ा ही पावन ,
कर लो भक्ति करो यमुना स्नान।
सूर्योदय संध्याकाल
रटते रहते रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीताराम।
यमुना में करते कार्तिक में स्नान
जन्मों के सभी
धुल जाएंगे पाप ।
पतित पावनी मां गंगा यमुना ,
श्यामल रूप यमुना तट कृष्णमय ये प्यार धाम।
कार्तिक माह में कृष्ण की भक्ति करते जो जन,
सब मनवांछित फल पायो।
अयोध्या नगरी लौटे राम,
अयोध्यावासी के हैं राम,
जगमग दिवाली का है ये प्यार धाम।
दीपदान कार्तिक में
तुलसी पूजन करें आरती।
शालिग्राम तुलसी कर विवाह देवउठनी
सखियां भजन गाती ।
हरे कृष्णा,
हरे राम जपते
करते स्नान।
कार्तिक महत्तम कथा का गुणगान
जन जन करते ध्यान ।

ज्योत्स्ना मिश्रा

आओ एक दीप...

आओ एक दीप कुछ अलग सा जलाए
दिलों के सबके अंधेरे मिटाए

न हो नफ़रत किसी के लिए भी
प्रेम का एक एक दिया हम जलाएं

न ही हम दुखाएं दिल किसी का
इस संकल्प का एक दीपक जलाएं

जाति धर्म की दीवारें हटा कर
सद्भावना का भी एक दीपक जलाएं

जगमगा उठे देश ये हमारा
आओ भारत को सब मिल के जगमगाएं।।।

पूनम पाण्डेय

जब तुम ही नहीं...

जब तुम ही नहीं तो तेरे नज़ारों क्या करूँ।
दिल ही उजड़ गया तो बहारों का क्या करूँ।
इस दिल के आइने मे है तस्वीर आपकी।
मांझी बगैर ले के किनारों का क्या करूँ ।
देखा था ख्वाब हम तुम्हे अपना बनाएंगे।
ग़म देने वाले उजड़े ख़्वाबों का क्या करूँ।
पहले तो तुमने प्यार मे वादे निभाये थे।
अब जिन्दगी के झूठे सहारों का क्या करूँ।
जैसे भी करे उम्र में 'पतझर' की काट लो।
झोली मे ले के चाँद सितारो का क्या करूँ।

सावित्री मिश्रा

बाती फिर सुलगाएं

कार्तिक माह की अमावस जब आती है,
घर-घर दीपों की रोशनी जगमगाती है।
चौदह बरस बाद लौटे हैं सिया लखन रघुराई,
हर घर दीप जला अयोधया वासियों ने दिवाली मनाई।
मन-मुटाव मत रखना भाई दिवाली है आई,
हर दिल खुशियाँ छाई मिल -जुल कर रहना भाई।
झिलमिल -झिलमिल बिजली की रंग-बिरंगी लड़ियां ,
अब तो दिल से हटा दो द्वेष की फुलझडियां।
पर्व है मिलन का अंतर्मन का नेह निचोड़ लें,
बुझी हुई बाती फिर सुलगाएं आओ मिल दिए जलाएँ।
लक्ष्मी का स्वागत दीपों से करें फटाकों के धुएँ से नहीं,
प्रदूषण मुक्त दिवाली मनाएँगे
स्वस्थ सौहार्द हम लौटाएंगे।

प्रवीणा त्रिवेदी ' प्रज्ञा'

दीप मन से फिर उतारें

दीप मन से फिर उतारें,
हम धरा की आरती।
प्रेम पुष्प सु वारती,
जयति माँ जय भारती

जग से मिट जाए अँधेरा
ज्ञान बन फैले सवेरा
घोर तम का आवरण ,
बन ज्योति पुंज सँवारती
प्रेम पुष्प.....

जगत का कल्याण हो
माँ का सुयश गुणगान हो।
हो मुखर जन चेतना
बन सुघड़ दीप उजारती
प्रेम पुष्प.....

गीत खुशियों के प्रखर हों
शब्द वेदों के मुखर हों
हो उदित सदभावना
नव गीत दीप प्रकाशती
प्रेम पुष्प.....

पूर्ण हों हर मन की आशा,
ध्वस्त हो जाये निराशा
मुदित मन उल्लास हो
यह भाव'प्रज्ञा'सँवारती
प्रेम पुष्प.....

सुमन ढींगरा दुग्गल

डूबा है रौशनी में हर इक दर

डूबा है रौशनी में हर इक दर, हर एक बाम
दीवाली ले के आई है कितनी हसीन शाम
उतरे हुए हैं जैसे सितारे ज़मीन पर
कुछ इस तरह हुआ है चराग़ों का एहतिमाम

सुहानी शाम है और जगमगा रहे हैं चराग़
तुम्हारे आने की खुशियां मना रहे हैं चराग़
जिधर भी देखिए दीवार ओ दर मुनव्वर हैं
तेरी खातिर ही जश्ने चरागां मना रहे हैं चराग़

अनुराधा गर्ग दीप्ति

दीपोत्सव

ये हैं भारत के पर्व ।
संग लाते हैं हर्ष ।
ज्ञान दीपक जलाने के लिए।।

देवभूमि है भारत ,अयोध्या मथुरा।
दीप माला से जगमग है ,घर चौबारा।
प्रीत हिलमिल बढ़ाने के लिए ।

घर मोहल्ला हो साफ।
राग द्वेष करो माफ।
बैर सब में मिटाने के लिए।।

पूजें लक्ष्मी गणेश ।
साफ सुथरा परिवेश ।
सुख समृद्धि पाने के लिए।।

पांच दिन का त्योहार ।
हंसी-खुशी का व्यवहार ।
भाई चारा बढ़ाने के लिए है।।

है बुराई अंधकार ।
और अच्छाई प्रकाश ।
दीपोत्सव मनाने के लिए ।।

ज्ञान दीपक जलाने के लिए।
प्रीत जगमग फैलाने के लिए।
बैर सब में मिटाने के लिए।
सुख समृद्धि पाने के लिए।
भाई चारा बढ़ाने के लिए।
दीपोत्सव मनाने के लिए।।

कविता उपाध्याय क्षिप्रा

दीप जले

जगमग दीप जले ,
नीले अंबर में नन्हें तारे ,
वसुंधरा पर दीप जले ।
जगमग दीप जले ,।
अंधियारे सब दूर हुए हैं
मन में आस पले ।
अब ना कहीं हो अंतस में अंधियारा ,
चहुं ओर प्रकाश पले ।
जगमग दीप जले ।
गणपति को आओ
सब मिलकर पूजें ,
विघ्न विनायक कृपा करें ,।
लक्ष्मी जी का सम्मान करें,
देश खुशहाल बने ।
जगमग दीप जले
जगमग दीप जले धन्यवाद ।

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धमतरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

संस्थापक

स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332 Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

पुष्पा सिंह

दीपावली

आती है दीपावली जलते हैं दिए,
रोशन होता देश है,
पर सारी दुनिया जगमगाती है त
आए इस दिन लौट के मेरे प्रभु राम,
जन-जन का हृदय प्रफुल्लित है
और अयोध्या की तो बात ही क्या
वह तो वैसे ही खुशी से इतराती है त
खड़ी द्वार पर तीनों माएं,
लिए आरती का थाल,
राम लक्ष्मण संग पधारी सीता को,
गले लगा कर अपनी ममता लुटाती हैं
सीख लो अब मेरे देश की युवा बच्चो,
इस त्यौहार के अर्थ को,
हर दिए की रोशनी
बुराई पर अच्छाई का संदेश दे जाती है त
हो मां लक्ष्मी का आगमन हम सबके यहां,
करते विघ्न विनाशक के संग,
पूजन उनका
मां तुम आना जरूर, तेरे आने की चाहत में,
यह पुष्पा अपनी पलके बिछाती है त क्षण
आती है दीपावली जलते हैं दिए रोशन होता देश ,
पर दुनिया जगमगाती है।

नीता शर्मा

अयोध्या की दिवाली

कितनी अनुपम छटा,
उस दिन अयोध्या में छाई होगी,
जिस दिन प्रभु राम के पुनः आगमन पर,
हर्षोल्लास से,
अयोध्यावासियों ने दिवाली मनाई होगी।।
अनगिनत रश्मियों ने,
प्रकृति का श्रृंगार किया होगा,
देवी देवताओं ने भी फूल बरसाए होंगे,
ढोल,नगाड़े, मृदंग बजा,
नगरवासियों ने मंगल गीत गाए होंगे।।
राजीव नयन, श्याम वर्ण,
सौम्य छवि देख प्रभु राम की,
अपलक हो नर-नार,
भाव विभोर हुए होंगे,
समय ने भी गति रोक ली होगी,
जब रघुकुल नंदन,
माताओं और भाइयों संग मिले होंगे।।
अति पावन, शुभ वो बेला होगी,
अयोध्यापुरी भी खुद पर इतराई होगी,
बंदनवार लगा,
ध्वजा-पताकाएं फहरा,
घर घर दीप जला,
हर्षोल्लास से,
अयोध्यावासियों ने दिवाली मनाई होगी।।

सरस दरबारी

दीप से इल्तिजा

उस ठौर जाओ जगमगाओ दीप तुम
अनजान जो अब तक उजालों से पड़े

देहरियाँ वह जाके रोशन कर दो अब
घनघोर तम जिस द्वार पर डट कर खड़े

दर्द पोंछो जाकर उन नयनों से जो
अश्रु से अविरल सदा बहते रहे

हर्ष के कुछ बीज रोपो उस जगह
सदियों से दिल हैं जहाँ बन्जर पड़े

तुम चौखटें उजियारी जो करते रहे
उनसे परे भी द्वार कुछ कच्चे खड़े

पर्व सार्थक यह तभी कहलायेगा
उल्हास हर अंतस से एक जैसा झड़े

आशा निलय भदौरिया

पंचोदिवसीय दिपावली त्योहार

आई अमावस्या की रात आज जगमगाती हुई,
दीयों से सजी टिमटिमाती बारात आई है,
दीवाली का त्यौहार आया,
संग अपने खुशियो हजार लाया,
अगर मां बाप जीवन में साथ है,
तो रोज धनतेरस।
जीवनसाथी साथ है,
तो रोज रूपचौदस और बच्चे साथ ,
तो रोज दिवाली है।
पति पत्नी का हमेशा साथ है,तो रोज सुहाग पड़वा है
और भाई- बहन साथ है,
तो रोज भाई-दूज ,
हर रोज हजारों मिठाइया चखी है
अपने जीवन में इस संसार में,
पर किसी खुशी के आंसू से मीठा कुछ भी नहीं ऋगा।
दीपावली के जलते दियों की प्रत्येक किरण आपको और
परिवार के लिए सुखकारी, कल्याणकारी और मंगल
कारी हो।
इन्हीं दीपको के समान आपका पूरा जीवन जगमगाता रहे।
मां लक्ष्मी, गणेश जी सरस्वती
और कुबेर आप सभी को
सुख समृद्धि वैभव व ख्याति प्रदान करें।
इन्ही मंगल कामनाओं के साथ आपको
सपरिवार दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं !!

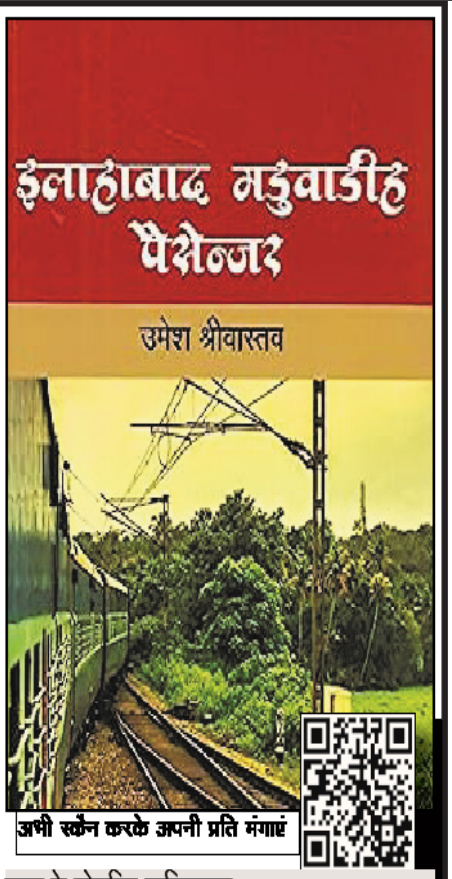

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार
श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह 'इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर' प्रकाशित हो गया है।
उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।
पुस्तक अमेज़न पर उपलब्ध है।

'गुनई', 'गोदान' का होरी नहीं.....!!!

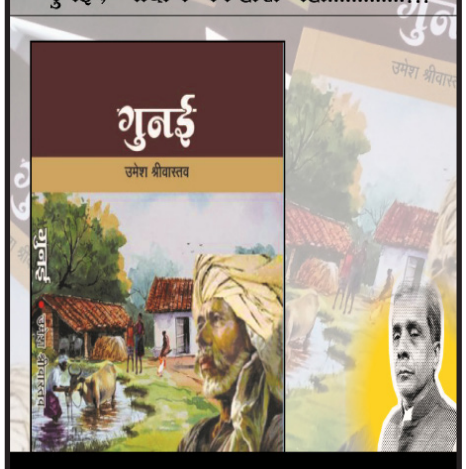

उमेश श्रीवास्तव कृत 'गुनई' उपन्यास
अब बाज़ार मे उपलब्ध है।

शहर समता विचार मंच,प्रयागराज

शैल तनया स्मृति सम्मान

सुमन ढींगरा दुग्गल
शैल तनया स्मृति सम्मान
2023

प्रथम शैल तनया स्मृति सम्मान 2023 इस बार प्रसिद्ध शायरा, कहानीकार और लेखिका वरिष्ठ साहित्यकार सुमन ढ़ीगरा दुग्गल को एक अलंकरण समारोह में 4 दिसम्बर 2023 को दिया जाएगा।

साहित्यिक संयोजक
रचना सक्सेना

संस्थापक /सचिव
उमेश श्रीवास्तव